परमेश्वर का नया प्रबन्ध

बाइबल के छात्र मनुष्यजाति के लिए परमेश्वर के प्रबन्ध को तीन विलक्षण कालों अर्थात पुरखाओं के युग, यहूदी युग तथा मसीही युग के रूप में देखते हैं। मानवीय इतिहास के इन तीन परिचित कालों को उस समय के रूप में जाना जाता है जब तीन अलग-अलग ''प्रबन्धों'' में परमेश्वर ने अपनी इच्छा तथा अनुग्रह से लोगों के साथ व्यवहार किया।

''पुरखाओं'' के समय तथा प्रबन्ध में परमेश्वर *परिवारों* के साथ कार्य करता था। *पिता* द्वारा ही परमेश्वर अपनी बात करता था; इसलिए, इस प्रबन्ध में याजक, पिता की धारणा को ही माना जाता था। नेतृत्व तथा शासन असंख्य भाई-बन्धुओं को दिया जा सकता था, और पुरखे का अधिकार पहलौठे पुत्र को सौंप दिया जाता था।

अगले प्रबन्ध का नाम ''यहूदी'' या ''मूसा'' की व्यवस्था है। यह वह समय था जब सीनै पर्वत पर मूसा द्वारा दी गई विशेष व्यवस्था के अधीन परमेश्वर एक *जाति* के साथ सम्बन्ध रखता था (निर्गमन 20; यूहन्ना 1:17)। व्यवस्था की इस सुव्यवस्थित प्रणाली में लेवी के गोत्र, अर्थात *याजकाई के गोत्र* के लिए प्रबन्ध थे; मूसा का भाई, हारून पहला महायाजक था (निर्गमन 28; 29)। असाधारण व्यवस्था आत्मिक तथा सांसारिक दोनों थी। इसमें न केवल परमेश्वर के प्रति इस्राएल की आराधना तथा सेवा के बारे में ही लिखा गया था, बल्कि उस नये राष्ट्र के लिए कानून भी था। इसलिए, इसमें अपराध, दण्ड, वित्तीय मामलों तथा सेहत और स्वास्थ्य विज्ञान तक के बारे में भी नियम थे।

मूसा की व्यवस्था केवल इस्राएल जाति को दी गई थी (निर्गमन 34:27, 28) और पृथ्वी के अधिकांश निवासियों पर, जिन्हें सामूहिक रूप से अन्यजातियां कहा जाता था, लागू नहीं होती थी। यहूदियों के लिए मूसा की व्यवस्था के प्रभावी होने की पन्द्रह शताब्दियों के दौरान अन्यजातियों के लिए किसी प्रकार की व्यवस्था देने के बारे में बाइबल कुछ नहीं बताती है, परन्तु घटनाओं से पता चलता है कि परमेश्वर अन्यजातियों के लिए भी चिन्तित था।[1]

यहूदी प्रबन्ध के दौरान अन्यजातियों के साथ परमेश्वर के सम्बन्धों की झलक पूरे पुराने नियम के इतिहास में मिलती है। इसलिए, कुछ विद्वान यह मानते हैं कि पुरखाओं का प्रबन्ध मसीह के क्रूस पर चढ़ने के समय तक अन्यजातियों पर लागू रहा।

तीसरे प्रबन्ध का नाम है ''मसीही।'' यीशु ने क्रूस पर मरकर, सारे जगत के लिए

एक नई व्यवस्था दे दी थी। पौलुस ने दावा किया कि मसीही लोग ''पाप और मृत्यु की व्यवस्था से'' स्वतन्त्र हो गए हैं क्योंकि वे ''जीवन की आत्मा की व्यवस्था'' के अधीन आ गए हैं (रोमियों 8:2)। उसने ''मसीह की व्यवस्था'' (1 कुरिन्थियों 9:21) के अधीन होने और ''मसीह की व्यवस्था को पूरा'' करने की भी बात की थी (गलतियों 6:2)। याकूब ने ''स्वतन्त्रता की सिद्ध व्यवस्था'' और ''राज्य व्यवस्था'' (याकूब 1:25; 2:8) के विषय में लिखा। अब चाहे कोई किसी भी जाति या देश का हो, सब लोग इस नई व्यवस्था के अधीन ही हैं। इस नये प्रबन्ध में, पूर्व प्रबन्धों की भांति परमेश्वर परिवारों या जाति के साथ नहीं, बल्कि *व्यक्तिगत* तौर पर व्यवहार करता है।

प्रेरितों के काम पुस्तक मसीह के राज्य में नया जन्म लेकर उसकी व्यवस्था के अधीन होने वाले आरम्भिक लोगों में चौंकाने वाले तुरन्त बदलावों के साथ आरम्भ होती है। पहले, प्रेरितों ने यहूदियों में उन लोगों को सिखाया जो मूसा की व्यवस्था से परिचित थे। बाद में, उन्होंने अन्यजातियों में प्रचार किया, जिनमें कुरनेलियुस सबसे पहला था (प्रेरितों 10)।

एक-एक व्यक्ति द्वारा यीशु को ग्रहण करने से उनका सम्बन्ध परमेश्वर के साथ उस कलीसिया में हो गया जिसे यीशु ने बनाया था (मत्ती 16:18)। शीघ्र ही मण्डलियां पूरे जगत में फैल गईं।[2] प्रेरितों के काम में यह अन्तर्दृष्टि मिलती है कि परमेश्वर प्रभु की कलीसिया के लोगों के साथ निजी तौर पर और मण्डलियों के रूप में, अपने बच्चों से अब कैसे व्यवहार करता है।

मण्डलियों ने दूसरी मण्डलियों के साथ सहभागिता की

यरूशलेम की पहली मण्डली ने (प्रेरितों 2:41-47) अन्य नगरों में परमेश्वर की आराधना करने वाले साथियों की पहचान की। उन्होंने पतरस और यूहन्ना के हाथ अन्ताकिया के मसीहियों के लिए सहायता भेजी (प्रेरितों 8:14)। बाद में, इस मण्डली ने तरसुस के शाऊल नामक आदमी को स्वीकार किया जिसने दमिश्क में मसीह को ग्रहण किया था (प्रेरितों 9:26-28)। यरूशलेम की कलीसिया ने कैसरिया में अन्यजातियों के लोगों का मसीही बनना स्वीकार किया (प्रेरितों 11:18), जो यहूदियों और अन्यजातियों के बीच पूर्व धारणा की बड़ी दीवार के गिरने का प्रमाण था। इसी कलीसिया ने ''आत्मा की प्रेरणा से लिखे गए नये नियम की पहली पत्री'' भेजी, जो अन्यजातियों के खतने के बारे में प्रभु के निर्णयों की व्याख्या करने के लिए एक पत्र के रूप में तैयार की गई थी (प्रेरितों 15:22-31)। यह निर्णय स्पष्ट रूप से आत्मा की प्रेरणा से था, जो पवित्र आत्मा की अगुआई में लिखा गया था, प्रेरितों के वोट डालने के परिणाम स्वरूप नहीं (प्रेरितों 15:28)।

अन्ताकिया के मसीहियों ने अकाल के समय यरूशलेम और यहूदिया में राहत भेजी थी (प्रेरितों 11:27-30)। अन्ताकिया की कलीसिया ने भी सुसमाचार के प्रचार हेतु भूमध्य सागर के पार मिशनरी भेजे थे (प्रेरितों 13:1-3), और तीन वर्ष से अधिक समय बीत जाने के बाद ही उन्हें इन लोगों के लौटने की ख़बर मिली थी (प्रेरितों 14:26, 27)।

बाद में परोपकारी कार्य की आवश्यकता से मिले सहयोग तथा सहभागिता का एक और उदाहरण मिलता है। गलतिया, मकिदुनिया और अखया की कलीसिया ने यहूदिया में पड़े अकाल के लिए राहत भेजी। पौलुस ने इस दान को आगे देने में सहायता की थी (प्रेरितों 24:17; 1 कुरिन्थियों 16:1, 2; 2 कुरिन्थियों 8:1; 9:1, 2)।

समस्त ज्ञात जगत की विभिन्न मण्डलियां साथी मसीहियों के साथ सहभागिता करके, एक दूसरे को सामर्थ तथा मदद देकर उन्हें मान्यता देतीं और अपने आपको प्रभु की उसी कलीसिया के स्थानीय समूहों में मानती थीं। प्रत्येक स्थानीय कलीसिया विश्वव्यापी कलीसिया का लघु रूप थी।

विशेष लोगों ने मण्डलियों की अगुआई की

आरम्भ में यरूशलेम की सबसे पहली मण्डली में अगुवे प्रेरित ही थे। वे न केवल शिक्षा देने में बल्कि परोपकार के लिए मिले चन्दे को बांटने में भी अगुआई करते थे। परोपकारी कार्य करने की आवश्यकता पड़ने पर मसीही लोगों ने अपने दान ''प्रेरितों के पांवों'' (प्रेरितों 4:37) में रख दिए थे। आज, इस प्रकार के प्रबन्ध को कलीसिया के भण्डार या बैंक खाते के रूप में जाना जा सकता है। धन एक जगह इकट्ठा किया जाता था, और उस समूह के अगुओं अर्थात प्रेरितों के निर्णय से जरूरतमंदों में वितरित किया जाता था। वितरण के वास्तविक काम को करने के लिए प्रेरितों की सहायता के लिए कलीसिया के विशेष सेवकों को चुना गया, जिन्हें बाद में डीकनों के रूप में जाना जाने लगा था (प्रेरितों 6:1-6)। प्रेरितों की व्यक्तिगत अगुआई अस्थाई थी, क्योंकि परमेश्वर ने कलीसियाओं की कल्पना स्थाई नेतृत्व देने के लिए की थी जिसमें प्रेरितों के स्थाई तौर पर होने की आवश्यकता नहीं थी।

कुछ ही वर्षों में, यहूदिया में अकाल पड़ने पर अन्ताकिया के भाइयों ने यरूशलेम में कुछ दान भेजा था। यह राहत ''प्राचीनों के पास'' (प्रेरितों 11:30) भेजी गई थी। पौलुस के आरम्भिक मिशनरी प्रयासों में पुरुषों को प्राचीन नियुक्त करना भी शामिल था। जब उसने और बरनबास ने उन नई मण्डलियों में जिनमें वे काम कर रहे थे, अगुओं की नियुक्ति की, तो इन अगुओं को ''प्राचीन'' कहा गया था (प्रेरितों 14:23)।

पहली मिशनरी यात्रा के अन्त में खतने की समस्या की चर्चा के लिए विशेष सभा के समय, यरूशलेम में प्रेरितों के अलावा कुछ और लोग भी अगुवे थे; और उन्हें ''प्राचीन'' कहा जाता था (प्रेरितों 15:2, 4, 6, 22)। मिलेतुस में, पौलुस ने इफिसुस से आए भाइयों के साथ स्नेहपूर्ण और आंसू भरी विदाई सभा की। लूका ने लिखा कि ये लोग ''प्राचीन'' थे (प्रेरितों 20:17; 20:28 भी देखिए)। तीसरी मिशनरी यात्रा के अन्त में, यरूशलेम की कलीसिया के प्राचीनों की ओर से पौलुस के पास एक विनती की गई कि वह एक मन्नत को पूरा करने के लिए चार जवानों की सहायता करे (प्रेरितों 21:18-25)।

इन सभी घटनाओं में जब प्राचीनों का उल्लेख होता है, तो संदर्भों से पता चलता

है कि लूका प्रभु की कलीसिया की स्थानीय मण्डलियों के अगुओं के बारे में लिख रहा था। इन लोगों को ''प्राचीन'' कहकर पुकारा गया, और वे प्रभु द्वारा अपनी कलीसिया के स्थायी प्रबन्ध का भाग थे।

उनके पदनाम

नये नियम में इन अगुओं को तीन नाम दिए गए हैं: ''प्राचीन/ऐल्डर,'' ''अध्यक्ष/बिशप,'' और ''पास्टर।'' मिलेतुस में अपने प्रवचन में पौलुस ने इन्हें ''प्राचीन overseers'' (''बिशप्स''; KJV) कहा, जबकि लूका ने लिखा कि पौलुस ने ''प्राचीनों'' को उससे मिलने के लिए बुलाया था (प्रेरितों 20:17, 28)। तीतुस को क्रेते में छोड़ते समय पौलुस ने उसे प्राचीनों को नियुक्त करने की आज्ञा दी थी; परन्तु इन अगुओं की आत्मिक योग्यताएं बताते हुए, उसने भी उन्हें ''बिशप्स'' कहा था (तीतुस 1:5, 7)।[3] पतरस ने साथी प्राचीनों को उनके काम में ताड़ना देते हुए अपने आपको एक ''प्राचीन'' कहा था, फिर भी उसने उन्हें उस झुण्ड की रखवाली करने या उनका ''पास्टर (पासबान)'' बनने के लिए कहा था (1 पतरस 5:1, 2)। स्पष्टतः, इन सभी शब्दों का इस्तेमाल एक ही काम के लिए, एक ही ओहदे के लिए और एक ही प्रकार के लोगों के लिए किया गया था जो उस ओहदे पर थे। उन्हें इन तीनों नामों से पुकारा जाता था।

प्रिसब्युतरोस, वह यूनानी शब्द है जिसका नये नियम में चौहत्तर विभिन्न रूपों में अधिकतर अनुवाद ''प्राचीन'' हुआ है। प्रेरितों के काम में यह उन्नीस बार प्रयुक्त हुआ है। प्रेरितों के काम में दो संदर्भों में यह बूढ़े या बुज़ुर्ग आदमी के लिए भी प्रयुक्त हुआ है, जबकि सात बार यहूदी समाज के अगुओं के लिए इस्तेमाल किया गया है। परन्तु, प्रेरितों के काम में इस शब्द का अधिकतर इस्तेमाल प्रभु की कलीसिया के अगुओं के लिए ही हुआ है: इस प्रकार इस शब्द का इस्तेमाल दस बार हुआ है। ''प्राचीन'' एक ऐसा शब्द है जिससे किसी की आयु तथा अनुभव का पता चलता है, परन्तु कुछ संदर्भों में इसका अर्थ प्रभु की कलीसिया की मण्डली की अगुआई के लिए नियुक्त लोगों के विशेष समूह से जुड़ा है। अपनी आयु, अनुभव तथा आत्मिक परिपक्वता के कारण उन्हें कलीसियाओं के अगुवे बनना था।

अनुवादित शब्द ''बिशप'' या ''रखवाला'' *(एपिस्कोपोस)* दो यूनानी शब्दों को मिलाता है जिनका मिलकर अर्थ ''to scope over'' या ''to see over'' बनता है। अगुआई के मामलों में, यह उन लोगों के लिए इस्तेमाल होता है जो काम तथा कर्मचारियों पर निगरानी रखते हैं। नये नियम में इसका इस्तेमाल ग्यारह बार हुआ है; सात बार यह शब्द स्थानीय कलीसियाओं के आत्मिक अगुओं के लिए प्रयुक्त हुआ है। एक बार एक प्रेरित के काम के लिए इसका इस्तेमाल हुआ है (प्रेरितों 1:20)। दो बार इसका अनुवाद ''दृष्टि'' (लूका 19:44; 1 पतरस 2:12) और एक बार ''ध्यान से देखते'' रहने के लिए हुआ है (इब्रानियों 12:15)। स्थानीय कलीसिया की अगुआई करने वाले लोगों के लिए इस्तेमाल करने पर, इसका अर्थ उस समूह के लोगों के कार्यों की निगरानी रखना है।

''पास्टर'' या ''चरवाहा'' (*poimen*) शब्द का इस्तेमाल मूल तथा सांकेतिक हवालों में उनके लिए होता है जो भेड़ों की देखभाल करते हैं। नये नियम में इसका इस्तेमाल उनतालीस बार हुआ है जिसमें से कम से कम तेरह बार उन लोगों की व्याख्या के लिए हुआ है जो वास्तविक भेड़ों के झुण्डों की देखभाल करते हैं। यह शब्द आत्माओं के विशेष चरवाहे के रूप में यीशु के लिए पांच बार प्रयुक्त हुआ है, परन्तु, कम से कम सात बार इसका अर्थ स्थानीय कलीसियाओं के अगुवे से ही है। एक बार प्राचीनों के काम की व्याख्या के लिए इस शब्द का इस्तेमाल क्रिया रूप में हुआ है, जिससे यह पता चलता है कि मण्डलियों के अगुओं के लिए इन शब्दों को एक दूसरे के स्थान पर प्रयुक्त किया गया है (प्रेरितों 20:28)। आयु, अनुभव तथा आत्मिक परिपक्वता के कारण मण्डली के अगुओं को ''प्राचीन'' कहा जा सकता है, और भेड़ों के झुण्ड (इफिसुस के मसीही लोगों) की रखवाली करने के कारण उन्हें ''पास्टर्स'' या ''चरवाहे'' कहा जा सकता था। इसके अलावा उन्हें समूह के मामलों की निगरानी करने के लिए ''बिशप्स'' अथवा ''अध्यक्ष'' कहा जा सकता था।

आरम्भिक कलीसियाओं में इस प्रकार के स्पष्ट काम या ओहदे पौलुस के पत्र में मिलते हैं जो उसने फिलिप्पी की मण्डली के नाम लिखा था (फिलिप्पियों 1:1) जिसमें उसने लिखा, ''अध्यक्षों (बिशप्स) और सेवकों (डीकन्स) समेत।'' परमेश्वर ने कलीसिया को चलाने के लिए नेतृत्व ठहराया, और उनकी व्याख्या के लिए ''प्राचीन,'' ''अध्यक्ष,'' और ''पास्टर'' शब्द का इस्तेमाल एक दूसरे के पर्यायवाची के रूप में होता था। इस आयत में डीकनों के उल्लेख से संकेत मिलता है कि फिलिप्पी की कलीसिया में अगुओं के साथ-साथ सेवा के लिए दास सेवकों को अलग पहचान मिली थी।

उनकी भूमिकाएं

प्राचीनों/बिशपों/पास्टरों का काम तीन तरह का होना था। पहले, प्राचीनों ने *अगुआई* करनी थी। उनकी ज़िम्मेदारियों में स्थानीय कलीसिया जहां वे रहते और आराधना करते थे, का प्रबन्ध तथा रखवाली शामिल थी (1 तीमुथियुस 3:5; 5:17)। उन्होंने अपने उदाहरण देकर, शिक्षा देकर और निगरानी रखकर प्रबन्ध चलाना होता था (इब्रानियों 13:7, 17)।

दूसरा, उन्हें सही ढंग से अगुआई करने के लिए, अपने निजी जीवनों तथा आचरण पर ध्यान देना आवश्यक था (प्रेरितों 20:28)। इन लोगों ने अपने अधीन आत्माओं की ओर से भी निगरानी करनी थी (इब्रानियों 13:17), और सत्य का विरोध करने वाले ''विवादियों'' को ताड़ना देकर और समझाकर उन्हें परमेश्वर के वचन के विश्वासी भी रहना था (तीतुस 1:9)।

तीसरा, उन्होंने *भोजन खिलाना था।* प्रभु ने कलीसिया की रूपरेखा बनाई ताकि योग्य लोग अपने अधीन आत्माओं को निर्देश दे सकें (प्रेरितों 20:28; 1 पतरस 5:2)। उन्हें (1 तीमुथियुस 3:2) जो सकारात्मक शिक्षा देने का काम करना था; और, एक नकारात्मक रूप में उन्हें वे पहरेदार बनना था जिन्हें मसीह की शिक्षाओं का इतना ज्ञान हो कि वे

झूठी शिक्षाओं का मुंह बन्द कर सकें (तीतुस 1:9)। उनमें इतना साहस होना ज़रूरी था जिससे कि वे अपने अधीन कलीसिया के सदस्यों में झूठे शिक्षकों को आने से रोक सकें (तीतुस 1:10, 11)।

सारांश

पहली सदी की मण्डलियां स्वतन्त्र थीं अर्थात वे सभी मामलों को देखती थीं और निर्णय भी स्वयं ही लेती थीं। कोई भी मण्डली दूसरी मण्डली पर किसी प्रकार का नियन्त्रण नहीं रखती थी। ये कलीसियाएं किसी डायोसिस, प्रिसबिटरी, एसोसिएशन, सिनड या ज़िले में संगठित नहीं थीं। उनका कोई राष्ट्रीय या अन्तरराष्ट्रीय मुख्यालय नहीं था। वे बहुत से स्थानीय लोगों के समूह थे जो प्रभु यीशु मसीह की सेवा करते थे। उन सबने एक ही सुसमाचार को माना था; उन सबको प्रभु ने कलीसिया में मिलाया था; और वे एक ही प्रकार से आराधना करते, शिक्षा देते और काम करते थे। उन सब में ये गुण थे क्योंकि वे एक ही ''सिर'' अर्थात प्रभु के रूप में यीशु मसीह को मानते थे (कुलुस्सियों 1:18)। उसने सभी मण्डलियों को एक जैसे निर्देश तथा शिक्षाएं दी थीं। स्थानीय कलीसियाएं विभिन्न अवसरों पर एक दूसरे से सहयोग और उनकी सहायता करती थीं, परन्तु वे स्वायत्त थीं।

प्रत्येक कलीसिया में सदस्यों द्वारा आत्मिक योग्यता को पूरा करने वाले पुरुषों को चुने जाने के बाद, अगुआई करने वाले पुरुषों की *बहुसंख्या* थी। इन पुरुषों तथा कलीसियाओं के साथ इनके सम्बन्धों के बारे में हमेशा पुरुषों के समूह का उल्लेख आता है। किसी मण्डली पर एक प्राचीन या ऐल्डर, मण्डलियों के समूह पर एक प्राचीन, या किसी विशेष मुखिये या प्रधान प्राचीन की धारणा नये नियम में नहीं है।

प्राचीन उन कलीसियाओं में जिनमें वे सेवा करते थे, मसीहियों को काम करने के निर्देश देते थे। उनका अन्य मण्डलियों के प्राचीनों पर किसी प्रकार का कोई अधिकार नहीं होता था। किसी प्राचीन के प्रति सम्मान दिखाते हुए कोई मण्डली सलाह के लिए उसे अपनी अगुआई करने के लिए तो कह सकती थी, परन्तु बाहर के किसी प्राचीन द्वारा उस स्थानीय कलीसिया पर अधिकार करने की परमेश्वर की योजना नहीं थी।

कलीसिया के अगुओं ने उस प्रकार से और नियम या परम्पराएं नहीं लिखी जैसे मूसा की व्यवस्था में यहूदियों ने, विशेषकर पुराने तथा नये नियम के अन्तराल के बीच लिखी थीं। तालमुड के दो भाग थे जिन्हें ''मिशनाम'' और ''गिमारा'' के नाम से जाना जाता है, जो इस्राएल को दी गई परमेश्वर की व्यवस्था में जोड़ने वाले प्राचीन यहूदियों की उपज थी। परन्तु, प्रभु ने बहुत से अवसरों पर इन रीतियों की निन्दा की थी (मरकुस 7:6-9)। कलीसिया के अगुवे किसी प्रकार की कोई नई व्यवस्था या शिक्षा नहीं ला सके और उन्हें बदली हुई सामाजिक परिस्थितियों के अनुसार नियम बनाने का अधिकार भी नहीं था। उनकी भक्ति केवल परमेश्वर के वचन के साथ थी। मसीही लोगों के लिए नये नियम की धारणाओं के प्रति विश्वास योग्य रहने के लिए वही भक्ति आज भी कायम है।

कलीसिया के सदस्यों ने इन प्राचीनों की अगुआई में उनका तथा उनके निर्णयों का

सम्मान करना था ताकि वे प्रसन्नतापूर्वक उनके पीछे चल सकें। इन लोगों का चरित्र इतना भक्तिपूर्ण और उदाहरण प्रस्तुत करने वाला होना था जिससे उन्हें सम्मान मिले (1 पतरस 5:2, 3)। इसके अलावा इन लोगों ने साथी प्राचीनों के रूप में, किसी भी स्थानीय कलीसिया के सदस्यों की तरह एक दूसरे के अधीन होना था (इफिसियों 5:21)। जब कहीं निर्णय लेने में कुछ मतभेद हों, तो उन्हें स्वार्थ या धोखे से कुछ भी न करके मेल के बन्ध में आत्मा की एकता को बनाए रखना आवश्यक था (इफिसियों 4:3)। हर एक को दूसरे का सम्मान ''अपने से अधिक महत्वपूर्ण'' जानकर करना होता था, अर्थात दूसरे प्राचीनों के विचारों तथा निर्णयों को सम्मान देना होता था (फिलिप्पियों 2:3)।

प्रभु की कलीसिया में किसी और प्रकार के नेतृत्व का प्रबन्ध नहीं मिलता है। परमेश्वर ने किसी प्रकार के ''अध्यक्ष बिशपों,'' ज़िला बिशपों, कार्डिनलों, पोपों, या प्रेरितों के पद पर बिठाने के लिए किसी को नहीं ठहराया था। उसने आज की साम्प्रदायिक कलीसियाओं में पाए जाने वाले किसी ओहदे को भी नहीं ठहराया था। प्रभु द्वारा डिज़ाइन किया गया आत्मिक प्रबन्ध उस ''प्रमुख चरवाहे'' की ओर से जो उन्हें अपने समर्पण तथा काम के लिए महिमा के मुकुट का पुरस्कार देगा, चरवाहों के रूप में योग्य लोगों के लिए था (1 पतरस 5:4)।

परमेश्वर का प्रबन्ध ही काफी है; इसमें कुछ और जोड़ने की आवश्यकता नहीं है। प्रेरितों के काम की पुस्तक परमेश्वर द्वारा अपनी कलीसियाओं में उस प्रबन्ध को लागू करने का इतिहास है।

पाद टिप्पणियां

[1]किसी अन्यजाति देश का एक उदाहरण अश्शूर की राजधानी नीनवे है। योना नामक एक इस्राएली भविष्यवक्ता को नीनवे के लोगों को मन फिराव का अवसर देने के लिए भेजा गया था (योना 1:1, 2; 3:1-4)। योना ने उन्हें मूसा की व्यवस्था मानने के लिए नहीं कहा था, क्योंकि यह उन पर लागू नहीं होती थी। यह निष्कर्ष निकाला जाना चाहिए कि परमेश्वर इन अन्यजातियों को पापों से मन फिराने का अवसर दे रहा था; और पाप तो व्यवस्था का विरोध है (रोमियों 4:15; 15:13; 1 यूहन्ना 3:4), इसलिए वे परमेश्वर की किसी न किसी व्यवस्था के अधीन अवश्य थे। [2]अधिक व्याख्या के लिए पिछला पाठ देखिए। [3]तीतुस 1:5 में *प्रेसब्यूटोस* रूप का इस्तेमाल किया गया है, जिसे अंग्रेज़ी की KJV, NIV और NASB बाइबलों में ''Elder'' और हिन्दी की बाइबल में प्राचीन अनुवाद किया गया है। तीतुस 1:7 में *एपिस्कोपोस* शब्द का इस्तेमाल किया गया है जिसे अंग्रेज़ी की KJV बाइबल में ''बिशप'' और NIV तथा NASB बाइबल में और हिन्दी की बाइबल में ''अध्यक्ष'' लिख कर नीचे टिप्पणी में ''बिशप'' अनुवाद किया गया है।